Total No. of Questions - 3] [Total Pages : 4

(2062)

9720

M.A. Examination

HINDI

(आधुनिक हिन्दी उपन्यास)

Paper–XII (ii)

(Semester–III)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80 / Private : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : सभी प्रश्न कीजिए।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) 'मैं वचन देता हूँ प्राणप्यारी मृगनयनी! समझ गया कि मन में तुमको जीवनपर्यन्त बसाए रखने के लिए नियम-संयम ही बल दे सकेगा। तुमको कलाओं के सीखने के लिए पूरा-पूरा समय दिया करूँगा, और तुमको सदा अपने निकट समझता हुआ इतना काम करूँगा, इतना कि काम को पूरा करते-करते घनी उमंग बनी रहे तुम्हारे दर्शन प्राप्त करने की।'

अथवा

'आचार्य बैजनाथ धन्य हो! कितने तन्मय हो गए थे तुम अपने रस में! हम सब भी तल्लीन हो गए। इन्होंने तुम्हारे रस का पूरा स्वाद लेने के लिए अपनी वीणा ही रख दी। कला ने तँबूरा और उन्होंने पखावज! हम सब डूब-डूब गए तुम्हारी रसधारा में! मैं तुमको नमस्कार करता हूँ।'

(ख) मैं तो पहले ही अपना मन स्थिर कर चुकी; सबसे अलग ही अलग रहना चाहती हूँ, जहाँ मेरी स्वाधीनता में बाधा डालने वाला कोई न हो। मैं सत्पथ पर रहूँगी या कुपथ पर चलूँगी, यह जिम्मेवारी भी अपने ही सिर लेना चाहती हूँ। मैं बालिग हूँ और अपना नफा-नुकसान देख सकती हूँ। आजन्म किसी की रक्षा में नहीं रहना चाहती; क्योंकि रक्षा का कार्य पराधीनता के सिवा और कुछ नहीं।

अथवा

नहीं मिस साहब, यह खिलाड़ियों की नीति नहीं है। खिलाड़ी जीतकर हारने वाले खिलाड़ी की हँसी नहीं उड़ाता, उससे गले मिलता है और हाथ जोड़कर कहता है– 'भैया, अगर हमने खेल में तुमसे कोई अनुचित बात कही हो, या कोई अनुचित ब्यौहार किया हो, तो हमें माफ करना।' इस तरह दोनों खिलाड़ी हँसकर अलग होते हैं, खेल खत्म होते ही दोनों मित्र बन जाते हैं, उनमें कोई कपट नहीं रहता। मैं आज राजा साहब के पास गया था और उनके हाथ जोड़ आया। उन्होंने मुझे भोजन कराया। जब चलने लगा तो बोले, मेरा दिल तुम्हारी ओर से साफ है, कोई शंका मत करना।

(ग) झूठ– गुस्से में तुनक कर रेबनी ने जवाब दिया– झूठ बोलते हैं आप! इतना कहकर उठ खड़ी हुई। दोनों हाथ फैला कर आगे से मालिक ने उसे घेरना चाहा। रेबनी की भवें इस बार तन गईं, चेहरे पर घिन छा गया। हिम्मत बाँध कर उसने कहा– यह क्या हो गया है आज आपको मालिक?.....

अथवा

फिकिर काहे की?– मैं बोला– अपने घर में ये दो ही परानी तो हैं, बाकी मैं हूँ और अब तुम आई हो। तुम्हारी खिलखिलाहट सुनकर माँ बड़ी खुश हुई होगी, आज उसके मन पर से चिन्ता का सिल उतर गया होगा। देखना, बुढ़िया को आज से अच्छी नींद आएगी, रही रेबनी सो वह बड़ी सुधंग है। वह तुम्हारे इस ढीठपने का कहीं भी जिकिर नहीं करेगी।

3×7=21

(3×10=30)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर विस्तार में दीजिए :

(क) मृगनयनी के व्यक्तित्व के अद्वितीय पक्षों पर प्रकाश डालिए।

(ख) सोफिया के व्यक्तित्व में व्याप्त निष्पक्षता एवं उदारता पर प्रकाश डालते हुए उनकी दृढ़ता को रेखांकित कीजिए।

(ग) 'मृगनयनी' उपन्यास में इतिहास और कल्पना का सहज और स्वाभाविक सामंजस्य है। इस कथन पर विचार कीजिए।

(घ) 'रंगभूमि' का नायक सूरदास गाँधीवादी विचारधारा हेतु कैसे और क्यों दृढ़ संकल्पित है?

(ङ) 'बलचनवा' उपन्यास की कथावस्तु और पात्रों के व्यक्तित्व के पारस्परिक संबंध का विवेचन कीजिए। 3×18=54

(3×20=60)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

(क) राजा मानसिंह ने अपने गले से सोने का रत्नजड़ित हार निकालकर निन्नी के गले में क्यों डाल दिया?

(ख) जॉन सेवक ने क्यों कहा कि वह अनुभवी आदमियों से डरता है?

(ग) प्रेमचंद ने क्यों मान लिया कि अंधे सूक्ष्मदर्शी होते हैं?

(घ) सूरदास ने किसे और क्यों कहा कि अपना पाप सबको भोगना पड़ता है?

(ङ) बलचनवा के पिता की मृत्यु कैसे हुई? 5×1=5

(5×2=10)